बाल किलकारी

दिसम्बर 2015

वर्ष - 01, अंक-06
मूल्य 10/-

(बिहार बाल भवन का मासिक अखबार)

किलकारी लाल

स्वच्छ रखें धरा को,
सुनें धरती की आवाज,
एक सफर का अंत होगा,
एक सफर का आगाज।

प्यारे दोस्तो,

एक सफर का अंत होने जा रहा है, और एक सफर आरंभ होने को है। क्या लगता है? कितनी जल्दी गुजर गया न यह वर्ष। इस बीच हमें कितने सारे अच्छे बुरे, खट्टे-मीठे पल देखने को मिले। कुछ खास लम्हें, खास बातें हमारे चंचल मन के किसी झरोखे में सदा के लिए बस गए। कुछ ऐसी यादें होंगी जो मन को खुशी, उल्लास से भर देगीं। कुछ ऐसी स्मृतियाँ भी पीछे छूट जाएँगी, जिनकी याद आते ही आँखियाँ आँसूओं से भर जाएगीं। मेरे लिए सबसे उदासीन लम्हा वो था जब मुझे पता चला मेरे फेवरेट मिसाईल मैन डा० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम। इस धरती से आसमाँ के लिए रवाना हो गए। आपके लिए कौन सा था....?खैर सर्दी हौले-हौले पुरी तरह से प्रवेश कर चुकी है। रात की कड़कड़ाती ठंड ने बक्शे में बंद रजाई की याद दिला दी है। घासो पर मोती सी ओस की बूँदे, सुबह सुबह कुहासे से घिरी प्रकृति। और धुंध को चीरती पृथ्वी पर आती सूर्य की गुनगुनी धूप। ऐसा लगता है मानो प्रकृति खुलकर अपनी छटा बिखेर रही हो। पर इस सर्दी में जितनी गर्माहट जरूरी है उतनी स्वच्छता भी। कहते हैं कि एक आदर्श जीवन और समाज का निर्माण स्वच्छता के आधार पर होता है। शायद इसलिए मम्मी हमें बात-बात पर टोकती रहती है कि, 'चप्पल बाहर खोलकर आओ, कूड़े इधर क्यों फेंक रहे हो, कूड़ेदान में फेंको'। वो इसलिए क्योंकि घर गंदा न हो। यह भारत और बिहार भी तो हमारा घर ही है। तो हम इसको स्वच्छ रखेंगे न? जिस तरह मधुमक्खी फूलों के रस चूसकर मधु तैयार करती है। उससे सभी पशु, पक्षी और प्राणी को लाभ मिलता है। उसी तरह हम बच्चे स्वच्छता के पुष्प चूमकर एक स्वच्छ समाज का निर्माण करेंगे।

''कूड़ा कचड़ा नहीं फैलाने का, अब हमने संकल्प लिया है।
इस धरती को रखेंगे स्वच्छ, जिस पर हमने जन्म लिया है।''

तुम्हारा नन्हा साथी

– अभिनंदन गोपाल

बालश्री सम्मान प्रतियोगिता

राष्ट्रीय बाल भवन, नई दिल्ली द्वारा 1995 में बाल श्री सम्मान प्रतियोगिता की शुरुआत की गई थी। इस प्रतियोगिता के राज्य स्तरीय क्रियान्वयन में जिला स्तरीय एवं राज्य स्तर पर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 4 सृजनात्मक विधाओं (1. सृजनात्मक प्रदर्शन कला (नाटक, नृत्य, संगीत, वाद्य वादन) 2. सृजनात्मक लेखन (कविता, कहानी, नाटक लेखन, निबंध । (3) सृजनात्मक कला (चित्रकला, मूर्तिकला, शिल्पकला, दृश्यकला), (4) सृ. वैज्ञानिक नवीकरण (मॉडल निर्माण, परियोजना निर्माण, वैज्ञानिक समस्या समाधान, वैज्ञानिक नवप्रर्वतन) के क्षेत्र में बच्चों की क्षमता की पहचान की गयी। इसी क्रम में जिलास्तर पर 160 एवं राज्य स्तर पर 105 बच्चों ने प्रतियोगिता में भाग लिया। 31 अक्टूबर, एवं 01 नवम्बर, 2015 को राज्य स्तरीय बाल श्री सम्मान प्रतियोगिता किलकारी बिहार बाल भवन, पटना में आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में विशिष्ट प्रदर्शन करने वाले 18 बच्चे चयनित हुए। जिन्हें बाल दिवस समारोह, 2015 कार्यक्रम में बाल श्री सम्मान से सम्मानित किया गया। चयनित बच्चें राष्ट्रीय बाल श्री सम्मान प्रतियोगिता, राष्ट्रीय बाल भवन, नई दिल्ली में भाग लेंगे।

किलकारी परिवार की ओर से ढेरों शुभकानाएँ!

विहा श्रेया (निबंध)

प्रियंतरा भारती (कहानी)

तुलसी लवली (नाटक लेखन)

काजल कुमारी कविता

विशेष कविता

बच्चे जब खेल में मगन हों

बच्चे, बाप के जूते में पैर डालते हैं
और थाहते हैं बाप की दुनिया
बच्चे करीने से रखी चीजों को
उलट-पुलट देते हैं
वे अदबदाकर पहन लेते हैं
उल्टे पाँव की चप्पलें, कपड़े उल्टे
बच्चे तमाम महान और विद्वत्तापूर्ण शब्दों को
अण्ड का बण्ड कर देते हैं
यह दुनिया उनके लिए खेल का मैदान है
वे महान-से-महान चीजों से खेल सकते हैं
बच्चे खेल-खेल में बेतरतीब दुनिया को
खुद-ब-खुद समझते हैं
दुनिया को तरतीबवार सजाने के लिए
अपने हाथों को तैयार करते हैं
बच्चे जब खेल में मगन हों
खुदा के वास्ते ! उन्हें डिस्टर्ब मत करिए
वे दुनिया को बदलने के महान काम में लगे हैं।

सदानन्द शाही

अमर कुमार क्राफ्ट

अंशु कुमारी (मूर्तिकला)

रीया वर्मा (चित्रकला)

शुभ्रा सिन्हा (चित्रकला)

कविता कुमारी (नृत्य)

सोम्या सलोनी (नृत्य)

अंकित कुमार (संगीत)

वर्षा कुमारी (नाटक

अनुज कुमार (वाद्य संगीत)

सृष्टि स्वरूपा (वैज्ञानिक नवप्रर्वतन)

अमन कुमार (परियोजना निर्माण)

विष्णु कुमार (मॉडल निर्माण)

अंकित राज (दृश्य कला)

प्रदीप कुमार (कविता)

गुदड़ी का लाल, कर दिया कमाल

ड्रामेबाज कार्तिक

किलकारी के थियेटर विधा में मात्र छः माह से अभिनय की बारीकियाँ सीख रहे कार्तिक राज अब जी.टी.वी. पर दुनिया को अपनी ड्रामेबाजी दिखायेंगे।

कार्तिक रहते हैं स्लम में पर उसकी दुनियाँ है मंच पर । अपनी ड्रामेबाजी से सबको चकित और मोहित करने वाले कार्तिक जी०टी०वी० के चर्चित शो 'इंडियाज बेस्ट ड्रामेबाज' के फाइनल ऑडिशन मुंबई में चयनित हुए हैं।

राजमिस्त्री का काम करने वाले कार्तिक के पिता श्री मोती प्रसाद अपने बेटे को पढ़ा-लिखाकर बेहतर इंसान बनाना चाहते हैं। हॉली क्रॉस इन्टरनेशल विद्यालय में 5वीं कक्षा के छात्र कार्तिक किलकारी बिहार बाल भवन द्वारा आयोजित समर कैम्प 2015 से जुड़कर किलकारी नियमित रूप से आ रहे हैं। अपनी चंचलता, सहजता, कॉमेडी की क्षमता और अभिनय से कार्तिक ने अपनी पहचान स्वयं गढ़ी है। कॉमेडी अभिनय में कार्तिक दक्ष हैं। किसी भी थीम को कार्तिक समझने के लिए वक्त लेते हैं। समझ जाने के बाद जबरदस्त प्रदर्शन करते हैं। हमेशा हंसने-हंसाने वाला कार्तिक बड़ों को सम्मान करना जानते हैं। पढ़ाई के साथ-साथ बड़ा होकर थियेटर की दुनिया में कुछ बड़ा करना चाहते हैं।

किलकारी परिवार की ओर से कार्तिक को हार्दिक बधाई!

माथापच्ची

एक बकरी, तीन ककड़ी खाकर नौ लकड़ी उठाती है। यदि चार बकरी हो तो, बकरी ककड़ी और लकड़ी कितने होंगे?

ऐसे मना बाल दिवस 2015

दिनांक 13 और 14 नवम्बर, 2015 को किलकारी बिहार बाल भवन में बाल दिवस एवं किलकारी स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न हुआ। इस दिन बाल भवन की छटा कुछ और थी। घुसते ही ऐसा लगा मानो रात के अंधेरे में किसी जंगल में प्रवेश कर रहे हो। चार बड़े-बड़े अनूठे मंच जहाँ किसी पर गुफा का दृश्य था तो कहीं मचान का, और इन्हीं अनूठे मंचो पर किलकारी के 50 बच्चों ने जंगली जानवरों की वेशभूषा में अपनी प्रस्तुति से दर्शकों को आनंद विभोर कर दिया।

इस दो दिवसीय कार्यक्रम का उद्घाटन पूर्व मुख्य सचिव श्री अनूप मुखर्जी ने किलकारी परिसर में पौधा लगाकर किया। इस अवसर पर संजय गाँधी जैविक उद्यान के निदेशक एस. चन्द्रशेखर उपस्थित थे। निदेशक 'किलकारी' बिहार बाल भवन ज्योति परिहार ने उपस्थित अतिथियों को शानदार स्वागत किया, साथ ही कार्यक्रम के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

इस वर्ष बाल दिवस एवं किलकारी स्थापना दिवस 2015 मनाने के लिए नयापन करने का प्रयास किया गया। 'जंगल थीम' पर आधारित कार्यक्रम की पूरी प्रक्रिया में बच्चों की भागीदारी महत्वपूर्ण रही है। किलकारी प्रांगण को जंगलनुमा बनाने के लिए बच्चों ने पूरे दीवार पर पेंटिंग बनाया। लेखन विद्या के बच्चों ने नाटक लिखा, गायन विद्या के बच्चों ने गीत-संगीत तैयार किया और नाटक विद्या के बच्चों ने नाटक की प्रस्तुति के लिए कठिन अभ्यास किया। बच्चों ने पर्यावरण के बारे में ढेरों जानकारी इकट्ठे किये, खूब स्टडी और मस्ती किया। क्राफ्ट एवं पेंटिंग के बच्चों ने विभिन्न जंगली जानवरों के 75 मास्क तैयार किये।

इस अवसर पर 'बच्चों द्वारा पसंद और नापसंद के शिक्षक' को लेकर की गई रचना एवं चित्रों के संगम का अनूठा प्रयास पुस्तक 'सुनिये शिक्षक जी' का विमोचन किया गया। राज्य स्तर पर ''बाल-श्री सम्मान प्रतियोगिता'' के 4 सृजनात्मक विधाओं के क्षेत्र में 18 बच्चों को सम्मानित किया गया। 'श्री ओम प्रकाश सिंह' 'मरची बेगमपुर, पटना सिटी जागरूक अभिभावक सम्मान से सम्मानित हुए। 2009 से लगातार अपनी तीन पुत्रियों को ससमय किलकारी भेजना, बीच-बीच में प्रशिक्षकों से मिलना, बच्चियों की प्रगति की समीक्षा करना इनकी जागरूकता का परिचायक है।

किलकारी के बच्चों के प्रति लगाव, समर्पण एवं महत्वपूर्ण सहयोग हेतु संजय कुमार कुंदन को ''किलकारी सम्मान'' से सम्मानित किया गया। किलकारी के कार्यों को समर्पित और कर्त्तव्यनिष्ठता हेतु किलकारी प्रतिवर्ष एक सर्वश्रेष्ठ कर्मी को सम्मानित करती है। इस वर्ष नाट्य प्रशिक्षक रविभूषण 'मुकुल', को 'नूर-ए-किलकारी' से सम्मानित गया।

इस पूरे कार्यक्रम की परिकल्पना श्री उमेश शर्मा ने की। 'वायस ऑफ नेचर' नाटक का निर्देशन अजीत कुमार द्वारा किया गया और राजू मिश्रा एवं बृजबिहारी मिश्रा द्वारा संगीत बनाया गया। धन्यवाद ज्ञापन नेहा श्रीवास्तव, कार्यक्रम सहायक द्वारा किया गया।

कैमरे में किलकारी

नन्हें कलाकार

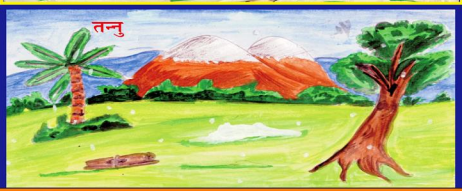

रोहित कुमार

स्वच्छ बिहार

इधर कचरा, उधर कचरा,
हर तरफ तो कचरा है।
कैसे बने स्वच्छ बिहार,
यही तो लफड़ा है।
लेकिन इस लफड़े को,
करना होगा दूर।
आस-पास हरदम,
स्वच्छ रखें जरूर।
इसके लिए हम सभी को
जागरूक होना पड़ेगा।
नहीं तो कचरे जैसा,
सब कोई ही सड़ेगा।
दोस्तो के साथ मिलकर,
अब झाड़ू उठाना है।
बिहार को स्वच्छ बनाकर,
आगे कदम बढ़ाना है।

सम्राट समीर, वर्ग - IXth

मेरी जिन्दगी

जिस दिन मैं घर में आयी,
वो दिन था बहुत सुहाना,
पर आज पड़ी हूँ कचरे में,
हो गयी हूँ मैं बेगानी।
नयी थी जब मैं उस उमर में,
खूब पैरों को भाया था,
सुन्दर-सुन्दर बड़े फीतो में
दे पॉलिश चमकाया था।
कूड़े कचरों से सनी थी जब मैं,
प्यार से उठाया एक बच्चे ने,
अपने कोमल हाथों से वह,
पीठ सहलायी उस सच्चे ने ।
उसके पैरों को दे सकून
मुझे बड़ी खुशी होती हैं।
किसी के काम आ जाती हूँ।
यही तो मेरी जिन्दगी है।

विष्णु कुमार, वर्ग-VII में

चौदह वर्ष पूजे गए

''ओह! मार डाला, दिखता नही इन्हें। इतनी जोर से ठेस लगाई कि मेरे चमड़े उखड़ गए।'' दाएँ पैर के जूते ने झुँझलाते हुए कहा। 'क्या हुआ भाई। ऐसे क्यों चिल्ला रहे हो?तुम्हारी बातें, ये मनुष्य थोड़े ही सुन पा रहे हैं। ये तो अपनी सुनते ही नहीं है वो फिर तुम्हारी तो दूर की बात है। वैसे हमें जन्म भी तो इन्हीं लोगों ने दिया है। अपनी सुरक्षा के लिए ही इन्होंने हमें खोजा और हम इनकी उम्मीदों पर हमेशा खरा उतरते आ रहे हैं। इनके रास्तों के काँटे को अपने आप पर चुभोते आ रहे हैं।' बाएँ जूते ने सीधा और सपाट उत्तर दिया। 'मतलब अपनी दुकान पर चलो ठीक ही है इस बहाने अपने दोस्तों से मुलाकात जाती है।' दाएँ जूते ने गहरी सांस लेते हुए कहा। 'पर आज कुछ खास दिन है हमारे लिए। आज हम अपने पूराने दोस्तो से भी मिलेंगे, उनसे बातें करेंगे।' बाएँ जूते ने उछलते हुए कहा। 'अरे हाँ आज रविवार है न। हमारे दुकानों पर काफी भीड़ रहेगी। हर दोस्तों से मिलना होगा कितना मजा आएगा। चलो जल्दी चलें।' दायीं चप्पल ने झुमते हुए कहा।

दोनों दुकान के पास पहुँचे। दुकान खुलते ही उनके सारे दोस्तो ने उन्हें शुभ प्रात: की बधाईयाँ देने लगे। सभी बहुत खुश थे क्योंकि आज रविवार जो था। तभी जूतों की तरफ से आवाज आयी 'क्यों न हम इस रविवार को थोड़ा यादगार बनाएँ।' बाकी सबने एक स्वर में पूछा 'कैसे?' जूतो के सरदार ने कहा 'आज हम सभी एक विषय चुनेंगे और उसपर बाते करेंगे। हमारे पूराने साथी जब आएँ तो उनसे भी उसी विषय पर बात करेंगे। इससे हमारा मन भी लगेगा और एक विषय पर जानकारी भी मिल जाएगी।' तभी जूतियों ने पूछा-'पर हमारा विषय क्या होगा?' सैंडिलो ने कहा-'क्यों न हम खुद से ही शुरूआत करें।' हवाई चप्पलों ने कहा 'हाँ यही सही होगा।' तब सबने मिलकर एक विषय चुना 'जूते-चप्पलों के प्रयोग के तरीके' और बात शुरू हुई। सबसे पहले स्पोर्ट्स जूते ने कहा हम तो सिर्फ दौड़ते ही रहते हैं। कभी क्रिकेट के मैदान में, कभी सड़क पर तो कभी टेनिस, हॉकी खेल में।'

तभी दुकान में एक शिक्षक आते हैं। 'राम-राम जूते भाई कैसे हैं।' सभी जूते एक साथ उन जूते से पूछते है जो शिक्षक के पैरों में होते हैं। 'बस चल रहा हूँ। तबियत ठीक नहीं रहती पर पॉलिस से चमकता रहता हूँ। देखो मेरे शरीर को, कई जगह ऑपरेशन के निशान मिल जाएंगे।' शिक्षक के जूते ने उदास होकर कहा। तभी दुल्हन सी सजी एक जूती आई और इठलाते हुए पूछी 'कैसे हैं आप सब।' सबने कहा-'हम अच्छे हैं पर आप बहुत खुश लग रही हैं, क्या बात है?जूती मुस्कुराते हुए बोली-'हाँ वो तो है। आजकल औरतें व लड़कियाँ हमें ज्यादा पसंद जो करने लगी है।' फिर सैंडिलों की जोड़ी ने उन दोनों से पूछा 'अच्छा आप ये बताइए कि क्या आप सिर्फ पहनने के काम आते हैं?' हाँ पर एक बार मैंने एक व्यक्ति की धुलाई भी की है। जो लड़कियों के साथ बस में बदतमीजी कर रहा था।' तभी शिक्षक के जूते ने कहा-'मेरा प्रयोग तो कई तरह से हुआ। एक बार मैं माला में पिरोया गया और न जाने किसके गले में डाल दिया गया। मेरे घर के बगल में ही मेरा एक साथी है जो उम्र में मुझसे भी बड़ा है। मैंने उसे देखा कि उसे छत के सबसे उपरी भाग में टांग दिया गया है क्योंकि वो मकान नया बन रहा था। उसकी हालत देख मैं बहुत दु:खी होता हूँ पर खड़ाऊँ की बात सुनकर खुशी होती है।' 'खड़ाऊँ ये क्या होता है?' सबने एक साथ पूछा। जूते ने कहा-'खड़ाऊँ भी हमारी ही तरह पैरों में पहने जाते थे। पर वो चमड़े के नहीं होते वो लकड़ी के है। मैं जहाँ रहता हूँ वही एक सुरक्षित जगह पर वो रखा है। उसके अनुसार उसे देवताओं ने भी पहना है। अपने पैरो की सुरक्षा के लिए। यहाँ तक की भरत ने तो उस की चौदह वर्षों तक पूजा भी की है और उसे राजगद्दी पर भी बिठाया है। भगवान राम के पैरों में भी शोभने का सौभाग्य उसे प्राप्त है। भरत ने तो उसे माथे से भी लगाया था।' जूती ने कहा 'अरे हाँ हम पर गाने भी बने है सुनोगे?' सबने कहा 'हाँ जरूर।' जूती ने गाना शुरू किया-'मेरा जूता है जापानी.....।' 'अरे वाह। कितना अच्छा गाना है।' सैंडिल ने प्रसन्नता के साथ कहा। शिक्षक के जूते ने कहा-'हमारी उपयोगिता आज परिस्थिति के अनुसार बदल गई है। हम सिर्फ पहनने के काम अब नहीं आते। किसी के अपमान के लिए भी हमें दिखाया जाता है, तो कभी शादी व्याह के अवसर पर हमें कहीं से चुरा लिया जाता है और ऐसे सुरक्षित जगहों पर रखें जाते हैं जहाँ सोने-चाँदी भी नहीं रखे जाते।' तभी जूती तपाक से बोली 'ठीक वैसे ही जैसे हम आपके है कौन फिल्म में माधुरी दीक्षित ने किया था।' यह सुनकर सभी हंसने लगते हैं और एक-दूसरे से विदा लेते हैं
अगली मुलाकात जल्द हो इस कामना के साथ।

-रानी कुमारी

हूँ मैं चप्पल

चप्पल हूँ, मैं चप्पल हूँ,
सभी पैरों की चप्पल हूँ।
मस्ती से मैं चलती हूँ
नहीं किसी से डरती हूँ
धूल से कभी नहाती हूँ
कीचड़ से लिपट जाती हूँ
चप्पल हूँ, मैं चप्पल हूँ
सभी पैरों की चप्पल हूँ।
कोमल-कोमल पैरों को
देती बड़ा आराम हूँ
रोड़ा-कोड़ा-काटों का
करती काम तमाम हूँ
चप्पल हूँ, मैं चप्पल हूँ,
सभी पैरों की चप्पल हूँ।
मेरी जात न पूछो बाबा
मैं हर घर में जाती हूँ
मेरा रूप है रंग-रंगीला
सभी पैरों को भाती हूँ
चप्पल हूँ, मैं चप्पल हूँ
सभी पैरों की चप्पल हूँ
कड़ी धूप, बरसात में
जाड़ा हो या रात में
सुख हो या दु:ख में
हर दम रहती साथ मै
चप्पल हूँ, मैं चप्पल हूँ,
सभी पैरों की चप्पल हूँ।

मुनदुन राज, वर्ग-Xth

बबलू बबली के चुटकुला

1. बबली : वहाँ से कोई आम आदमी आ रहा है।
   बबलू : आम का भी कोई आदमी होता है भला।
2. डॉक्टर : (बबलू से) यह लो दवाई दो चम्मच सुबह
   और दो चम्मच शाम को खा लेना
   बबलू : जब चम्मच ही खाना है तो दवाई क्यों दे रहे हैं?
3. बबलू : ऑपरेशन के समय, डॉक्टर मुँह पर कपड़ा क्यों बांध लेते हैं।
   बबली : ताकि ऑपरेशन गलत हो जाने पर मरीज उसे पहचान न सके।

झूठ का अहसास

प्रभु ईसा के एक शिष्य ने एक बार उनके खिलाफ झूठी गवाही दी। इससे अन्य शिष्य नाराज हो गये और शिष्य ने ईसा से कहा, इस शिष्य का इतना पतन कैसे हुआ कि झूठ बोलने में उसे जरा भी हिचक न हुई। उसे इसका दण्ड अवश्य मिलना चाहिए।

प्रभु ने उस शिष्य से कहा, कोई कुछ भी कहे, हमें इसका ख्याल नहीं करना चाहिए। उसके प्रति दुर्भावना रखना भी उचित नहीं। बल्कि यदि वह कोई गलत काम करता है, तो हमें प्रभु से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह माफ करे। जहाँ तक असत्य बोलने की बात है, तो कब क्या घटित और कौन क्या करेगा, यह कोई नहीं जानता। अब यदि तेरे बारे में यह कहूँ कि मुर्गा बांग देने से पहले तू भी झूठ बोलेगा, तो तुझे इस पर यकीन नहीं होगा।

इतने में सिपाही आये और ईसा को पकड़कर ले जाने लगे। इससे शिष्यों में हड़बड़ी मच गई और वे छिपने का स्थान ढूँढने लगे। वह शिष्य भी एक जगह छिप रहा था कि एक सिपाही ने उसे देख लिया और पूछा, कौन है तू? ईसा का साथी तो नहीं है न? अपनी जान बचाने के इरादे से उस शिष्य ने जवाब दिया कि ईसा को तो वह जानता ही नहीं। इतने में एक मुर्गे ने बाँग दिया और उस शिष्य को ईसा के शब्दों का स्मरण हो आया और वह सोचने लगा कि सचमुच मैं कितना पापी हूँ कि मैंने अपनी जान बचाने के लिए झूठ का सहारा लिया, जबकि थोड़ी ही देर पहले अपने एक साथी द्वारा झूठ बोलने पर मैंने उसकी निन्दा की थी। तात्पर्य यह कि हमें दूसरों की गलती तो तुरन्त दिखाई देती है, लेकिन वही स्थिति हम पर आ जाए तो हमें उसे दुहराने में जरा भी हिचक नहीं होती ।

प्रस्तुति – घुँघरू आनंद

बूझो-बुझौवल

1. **बीच ताल पर सोने की थाल ।**
2. **उजला प्लेट में काला मिठाई ।**
3. **एक डिब्बे में बत्तीस दानें, बताने वाले बहुत सयाने ।**
4. **टेढ़ी-मेढ़ी गली, बीच में है कुआँ, बूझो तो क्या ?**
5. **खाये हवा पीये तेल, फिर दिखाये अपना खेल ।**

[No.G1/Mail/Registration/Renewal/PT-73/2015]

कहानी

ये कैसा मजाक है

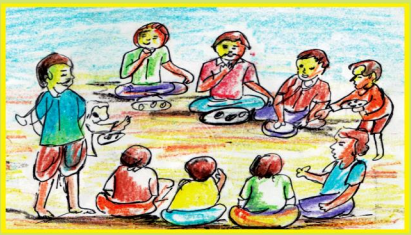

''अरे बहू! बेटा! बिटिया! सब इधर जल्दी आओ ! श्रवण के दादाजी सभी को आँगन में बुलाते हैं। घर के सभी सदस्य घर से निकलकर आँगन में आते हैं और कहते हैं ''क्या हुआ पिताजी?'''अरे सुनो यह वर्ष समाप्त होने वाला है और एक नया वर्ष आने वाला है। हम सोच रहे है कि इस वर्ष के बीत जाने से पहले कुछ नया काम करे।'' श्रवण के दादाजी बोले। ''जी पिताजी क्या करे''?श्रवण के पिताजी ने पूछा ''देखो मैं सोच रहा हूँ कि ठंड तो आ ही गई है। इसमें एक दावत रखेंगे और पूरे गाँव वाले को निमंत्रण देंगे साथ ही विदा करते समय ठंड से बचाव के लिए एक-एक चादर देकर उन्हें विदा करेंगे ताकि इस ठंड से अधिक से अधिक लोगों का बचाव हो सके'' श्रवण के दादाजी बोले। ''जी यह तो बड़ी अच्छी बात है और दावत में लिट्टी चोखा भी होगा।'' श्रवण के पिताजी ने जवाब दिया। ''तो मेरे बात से सभी लोग सहमत है न!'' श्रवण के दादाजी ने पूछा।

''जी हाँ'' सभी ने एक साथ जवाब दिया। ''जी हाँ दादाजी और उसमें नींबू की चाय जरूर रखिएगा'' श्रवण बोला। हाँ बेटे ठंड में तो चाय ही होगी''। श्रवण के दादाजी ने जवाब दिया। यह बात पूरे गाँव में फैल गई। सभी गाँव वाले खुश हुए। सभी अपने में चर्चा करने लगे ''ठाकुर जी कितने दयालु है, वह अपने परिवार के साथ हमलोगों का भी ध्यान रखते हैं।'' कुछ दिन बाद दावत शुरू हुई। उस दावत में बहुत सारे लोग आए, तो सबसे पहले उनको चाय पिलाकर स्वागत किया गया। लिट्टी की खुशबू चारों ओर फैल रही थी। सबको सुगंध पाकर और जोरों की भूख लग गई। थोड़ी देर बाद लोगों को खाने के लिए बैठाया गया। श्रवण और उसके पिताजी मिलकर लिट्टी चोखा परोसने लगे और पानी देने लगे। श्रवण के दादाजी इधर-उधर घुम-घुमकर देख रहे थे कि सभी अच्छे से खा रहे हैं न । ''क्यों भाई साहब लिट्टी का स्वाद कैसा है?'' श्रवण के दादाजी एक व्यक्ति से प्रश्न किए जो बैठकर वहाँ खा रहा था। ''जी बहुत अच्छा है।'' उसने जवाब दिया। कई लोग बैठकर लिट्टी-चोखा खा रहे थे तो कई लोग चाय की चुस्की लेने में डूबे थे। चाय और लिट्टी की खुशबू चारों ओर फैल रही थी। जिसको दावत के बारे में पता नहीं था। वह भी लिट्टी चोखा का आनंद उठा रहा था। सभी खुशी में झूम रहे थे। कुछ घंटे बाद दावत समाप्त हुई, तो सभी को चादर देकर विदा किया जा रहा था। सभी गाँव वाले चादर लेकर श्रवण के दादाजी को प्रणाम करते हुए गेट से बाहर निकल रहे थे लगभग सभी लोग चले गए थे, कि अचानक श्रवण के दादाजी गिर पड़े। ''पिताजी...., दादाजी..... कहते हुए सभी दौड़े, मानो जैसे उनको दिल का दौरा पड़ा हो, अचानक चारों तरफ सन्नाटा छा गया। गाँव वाले सभी व्यक्ति दौड़े-दौड़े पहुँच गए। श्रवण के पिता जी तुरंत फोन करके गाड़ी मँगवाए पूरा हॉल गाँव वालों से भर गया। सभी अपने में बात करने लगे। ''ये कैसा न्याय? अभी तो एकदम से ठीक थे, अचानक इन्हें क्या हो गया?'' सभी लोग भगवान का नाम लेने लगे। सबको ऐसा लगने लगा कि श्रवण के दादाजी की मृत्यु हो गई। यह बात सत्य है या झूठ, कोई साबित नहीं कर पा रहा था। तभी कुछ तालियों की आवाज आयी। सब उस आवाज की तरफ देखने लगे। देखकर सब हैरान हो गए। श्रवण के दादाजी तालियां मारते उठे और कहने लगे ''अच्छा, बहुत अच्छा मैं तो मजाक कर रहा था। मैं सबको जाँच रहा था कि मैं जितना लोगों को चाहता हूँ, उतना लोग मुझे चाहते हैं कि नहीं।'' बात सामने आ गई जितना मैं सबको चाहता हूँ। उतना ही मुझे भी लोग चाहते हैं। मुझे गर्व है तुम सब पर। मेरी एक खबर सुनते ही सब पहुँच गए।''''लेकिन, दादाजी ये कैसा मजाक है?'' आप जानते हैं मैं कितना चिंता में पड़ गया था।'' श्रवण कहते हुए अपने दादाजी के गले से लिपट गया। श्रवण के दादाजी के आँखों में खुशी के आँसू टपकने लगे। सभी लोग अपने-अपने घर की तरफ चल पड़े।

-प्रवीण, वर्ग-V

अबकी बार स्वच्छ बिहार

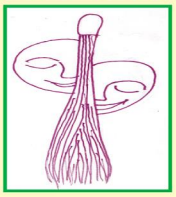

हम सब ने मिलकर देखा सपना,
स्वच्छ करेंगे, बिहार अपना ।
सब के सपनों को करेंगे साकार,
हर तरफ लहराएगी बहार ही बहार ।।
सबकी होगी एक ही पुकार,
अब की बार स्वच्छ बिहार ।
साफ करेंगे हम सभी रास्ते,
यह सब हम बिहार के वास्ते।
कूड़े-कचड़े का होगा नाश,
स्वच्छता में हम करेंगे वास ।।
सबकी होगी एक ही पुकार,
अब की बार स्वच्छ बिहार ।
कुड़े-कचड़ों के साथ,
करेंगे हम अपने दिल को भी साफ।
सबसे दोस्ती करके,
करेंगे हम सबको माफ।
सबकी होगी एक ही पुकार,
अब की बार स्वच्छ बिहार ।
स्वच्छ करके अपने बिहार को,
उज्जवल राज्य बनाना हैं।
सभी बुराईयों को पीछे छोड़कर,
हमें आगे बढ़ जाना है।
सब की होगी एक ही पुकार,
अब की बार स्वच्छ बिहार ।
बिहार को स्वच्छ बनाने में,
हम सब अपना हाथ बटायेंगे।
सुंदर, स्वच्छ और स्वस्थ बिहार,
हम सब मिलकर बनाएंगे।
सबकी होगी एक ही पुकार,

रौशन पाठक, वर्ग-VIIth

खेल

चप्पल, जूते, मोजे छौंटें
पहनो जल्दी और भागें

फिर आ गये न एक नये खेल-खेलने। इस खेल में जितने चाहें उतने बच्चे खेल-खेल सकते हैं। परन्तु दो टीम बनने होंगे। दोनों-टीमों में बच्चों की संख्या बराबर होंगी। इस खेल के लिए अपने-अपने चप्पल, जूते और मोजे खोलने होंगे और इन सबको गड्ड-मड्ड करके इनका एक ढेरा बनाना होगा।

अब दोनों टीमों को अलग-अलग खड़ा होना है और खेल खेलाने वाले के शुरू कहते ही दोनों टीमो के बच्चे चप्पल, जूते और मोजें की ढेर के पास जाकर अपने-अपने चप्पल, जूते और मौजे जल्दी-जल्दी छांटकर पहनना है।

इस तरह जिस टीम के सारे बच्चे चप्पल, जूते और मौजे पहन कर पहले वापस जायेंगे वही टीम विजेता माने जायेंगी। यदि गलती या धोखे में टीम का कोई बच्चा दूसरी टीम के बच्चे का चप्पल; जूता और मोजा पहन लेता है तो ऐसी गलती करने वाली टीम जीत जाने पर भी हारी हुई मानी जाएगी। तो देर किस बात की, चलो खेलते हैं।

सुधीर

खोजबीन

चलों दोस्तों आपको बताते हैं एक मजेदार बात। पता है पेड़ भी आत्महत्या करते हैं। हाँ, बिलकुल सच है। जब मनुष्य स्वयं खुद को मारता है तो उसे आत्महत्या कहते हैं। जीव वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि पेड़ भी आत्महत्या करते हैं। शिकागों विश्वविद्यालय के जीव वैज्ञानिक डॉ॰ रॉबिन फास्टर ने यह सिद्ध कर दिया। पनामा इस्थमस के केंद्र वरो कोलोरोडो द्वीप पर एक दशक तक पता करने के बाद उन्होंने पाया कि 'टेकीगैलिया वर्सीकोलर' नामक पेड़ आत्महत्या करते हैं। ये सभी मनुष्यों के समान घात-प्रतिघात मतलब की अलग अलग तरह के चोटें सहन नहीं कर पाते। नतीजा ये होता है कि वे अपने पुष्प त्यागने या दान करने लगते हैं। प्रकृति को अपने बीज उपहार में दे देते हैं और सालभर में अपने प्राण त्याग देते हैं, यानि सूखकर नष्ट हो जाते हैं। तो इसी तरह पेड़ जानबूझकर आत्महत्या करते हैं।

प्रियंतरा भारती, वर्ग-Vth

भेजें रचनाएँ

दोस्तो !

'बाल किलकारी अखबार' के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य-हम बच्चों की आवाज को बुलंद करना है और सृजनात्मक प्रतिभा को निखारना है। आप अपनी लिखी हुई कहानी, कविता, लघुकथा, चुटकुले, पहेली, चित्र, आपबीती, खेल, अखबार पर प्रतिक्रिया या रचनाएँ भेज सकते हैं। रचना के साथ अपना नाम, वर्ग, विद्यालय का पता, सम्पर्क नम्बर अवश्य ही भेजें। चुनी गई रचनाएँ अगले अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

-बाल सम्पादक मंडल

इस अंक के प्रतिभागी–
सृष्टि, सृजन, युवराज, विष्णु, सौरभ, तन्नु, सोनी, कशिश, माया, मानसी, हर्ष, रौशन, रानी, प्रियंका, शीतल।
बाल सम्पादक–मुनदुन, चुँघरू, प्रियंतरा, अभिनंदन, सम्राट, प्रवीण, तुलसी
संपादक–ज्योति परिहार, निदेशक, बिहार बाल भवन, किलकारी, पटना
कार्यकारी सम्पादक–राजीव रंजन श्रीवास्तव
संयोजक– सुधीर कुमार
कार्यालय– बिहार बाल भवन सैदपुर, किलकारी, पटना-800004 (बिहार)

इस अंक के जवाब
बुझो बुझौवल
1. कमल का पत्ता 2. आँख
3. दाँत 4. कान 5. स्टोव

माथापच्ची
बकरी - 4, ककड़ी - 12 लकड़ी - 36
कुल - 52

वेबसाइट: www.kilkaribihar.org
दूरभाष : 0612-3224919, 2661295 ई-मेल : info@kilkaribihar.org ब्लॉग : kilkaribihar.blogspost.in फेसबुक : www.facebook.com/kilkaribihar यूट्यूब : www.youtube.com/kilkaribihar